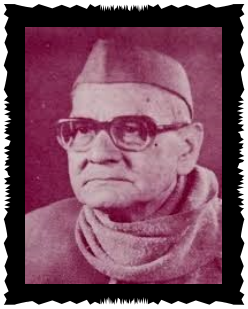

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

वीर तुम बढ़े चलो!

वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

हाथ में ध्वजा रहे बाल दल सजा रहे
ध्वज कभी झुके नहीं दल कभी रुके नहीं
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

सामने पहाड़ हो सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर डरो नहीं तुम निडर डटो वहीं
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

प्रात हो कि रात हो संग हो न साथ हो
सूर्य से बढ़े चलो चन्द्र से बढ़े चलो
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

एक ध्वज लिये हुए एक प्रण किये हुए
मातृ भूमि के लिये पितृ भूमि के लिये
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

मुन्ना-मुन्नी

मुन्ना-मुन्नी ओढ़े चुन्नी, गुड़िया खूब सजाई
किस गुड्डे के साथ हुई तय इसी आज सगाई

मुन्ना-मुन्नी ओढ़े चुन्नी, कौन खुशी की बात है,
आज तुम्हारी गुड़िया प्यारी की क्या चढ़ी बरात है!

मुन्ना-मुन्नी ओढ़े चुन्नी, गुड़िया गले लगाए,
आँखों से यों आँसू ये क्यों रह-रह बह-बह जाए!

मुन्ना-मुन्नी ओढ़े चुन्नी, क्यों ऐसा यह हाल है,
आज तुम्हारी गुड़िया प्यारी जाती क्या ससुराल है!

 ISSN:2583-8849